1414
21.7.22

मूल्यांकित उत्तरपुस्तिका

दृष्टि
The Vision

# हिन्दी साहित्य

## (Hindi Literature)

**टेस्ट-1**

**(प्रश्न पत्र-I)**

**DTVF / OPT-22 HL-2201**

| निर्धारित समय: तीन घंटे<br>Time Allowed: Three Hours | अधिकतम अंक : 250<br>Maximum Marks : 250 |
|---|---|

नाम (Name): दिव्यांशु पाल नागर

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): टेस्ट-1 // 20/07/22

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2022] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2022]:

| 1 | 1 | 3 | 8 | 8 | 5 | 9 |
|---|---|---|---|---|---|---|

## Question Paper Specific Instructions

***Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:***

*There are EIGHT questions divided in TWO SECTIONS.*

*Candidate has to attempt FIVE questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each section.*

*The number of marks carried by a question/part is indicated against it.*

*Answer must be written in HINDI (Devanagari Script).*

*Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly*

*Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.*

*Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.*

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 147 टिप्पणी (Remarks): —

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)
E-51

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)
R-11

# दृष्टि The Vision

## Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

अधिकतर उत्तर अच्छे हैं।
खण्ड-4 उत्तरों को थोड़ा और बेहतर करने की आवश्यकता है।
भूमिका-निष्कर्ष अच्छे हैं।
भाषा प्रवाहपूर्ण है।
उत्तरों का प्रस्तुतीकरण अच्छा है।



# दृष्टि The Vision



## खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) बोली को भाषा का दर्जा दिये जाने हेतु उपयुक्त कसौटियाँ

जब कोई बोली व्याकरणिक नियमों से बंधकर मानकीकृत रूप धारण कर लेती है उसे भाषा कहा जाता है। उदा. "खड़ी बोली" के मानकीकरण तथा परिष्करण के पश्चात् यह "मानक हिन्दी" कहलाती है।

**बोली को भाषा का दर्जा दिये जाने हेतु उपयुक्त कसौटियाँ**

(1) बोली का एक विस्तृत प्रयोक्ता वर्ग हो।
उदा. अवधी और ब्रज।

(2) बोली का समृद्ध साहित्य हो तथा सांस्कृतिक विरासत धारण करती हो।
उदा. रामचरितमानस तथा सूरसागर क्रमशः अवधी और ब्रज में।

(3) बोली की एक औसत तौर पर लिपि निर्धारित हो।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(4) बोली को राजकीय तथा सामाजिक मान्यता प्राप्त हो। उदा. मध्यकाल में फारसी।

(5) बोली अपने आस-पास के क्षेत्रों की बोलियों से संस्कारतः जुड़ी हुई हो। उदा. ब्रज।

19 वीं शताब्दी में खड़ी बोली उपरोक्त कसौटियों पर खरी उतरी तथा मानकीकरण के विभिन्न सोपानों को पार करते हुए भाषा के रूप में स्थापित हुई।

वर्तमान में 'राजस्थानी', 'तुलु' आदि बोलियों को भाषिक दर्जा देने की मांग जोर-शोर से उठायी जाती रही है। आवश्यकता है एक "स्थायी आयोग" की स्थापना हो जिससे देश में भाषिक अवरोध कम किया जा सके।


Copyright – Drishti The Vision Foundation


दृष्टि The Vision

(ख) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' तथा 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राष्ट्रभाषा हिन्दी 19 वीं शताब्दी में साहित्यिक और व्याकरणिक दोनों स्तरों पर समृद्ध हुई जिसमें 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' तथा 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' का अमूल्य योगदान रहा।

**काशी नागरी प्रचारिणी सभा** :- सभा को डॉ. श्यामसुन्दर दास सरीखे ~~भाषाविद्~~ भाषाविद् का सान्निध्य प्राप्त हुआ जिससे हिन्दी के विकास को बल मिला। इसके कार्य निम्नलिखित हैं-

(1) व्याकरण निश्चित करने के प्रयास :- इसमें कामता प्रसाद गुरु तथा किशोरीदास वाजपेयी का योगदान प्रमुख है।

(2) हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों तथा प्राचीन साहित्य का संरक्षण तथा संवर्धन।

(3) महावीर प्रसाद द्विवेदी के नेतृत्व में अनुशासनपूर्ण लेखन।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(4) हिन्दी से संबंधित संगोष्ठियों तथा चर्चाओं का आयोजन।

(5) हिन्दी के वैज्ञानिक विकास को सहायता प्रदान करना।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा :- महात्मा गांधी की प्रेरणा से इसकी स्थापना 1910 के दशक में मद्रास में हुई।

(1) दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना।

(2) विद्यालयों में हिन्दी पठन-पाठन की सामग्री उपलब्ध कराना तथा जनता को हिन्दी प्रयोग के लिये प्रोत्साहित करना।

(3) पत्रिकाओं यथा "हिन्दी प्रचार" तथा "हिन्दी भारती" का प्रकाशन।

(4) सत्यदेव परिव्राजक, सी. राजगोपालाचारी आदि का योगदान भी महत्वपूर्ण है।

इनके योगदान को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार द्वारा दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा को "राष्ट्रीय महत्त्व की संस्था" घोषित किया गया है।

ठीक है

6



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) हिंदी भाषा का मानकीकरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का आगमन हिंदी भाषा और साहित्य के लिये एक युगांतरकारी घटना थी। उनके सक्षम नेतृत्व में हिन्दी ने अपने विकास के कई आयामों को छुआ।

उनका योगदान निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है-

(1) आचार्य जी ने अब तक चली आ रही ब्रज भाषा के प्रयोग की जगह हिंदी के प्रयोग को प्राथमिकता दी जिससे गद्य के साथ-साथ पद्य के रूप में भी खड़ी बोली की स्थापना हुई।

(2) आचार्य जी 1903 से 1920 तक नागरी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष रहे तथा हिन्दी के मानकीकरण के लिये कामता प्रसाद गुरु सरीखे वैयाकरण को तैयार किया।

(3) साहित्य में जगन्नाथ दास रत्नाकर व प्रसाद जैसे साहित्यकार ब्रज का मोह नहीं छोड़ पा रहे थे। द्विवेदी जी की प्रेरणा से श्रीधर पाठक, अयोध्या सिंह



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खड़ी बोली

उपाध्याय आदि रत्नाकार हिन्दी में लिखने लगे।

(4) कविता के साथ-साथ निबंधों में भी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल व स्वयं महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सशक्त लेखन किया।

(5) निरंतर अनुसंधान व इच्छा शक्ति के संयोग से क्रमशः हिन्दी की वर्तनीगत, लिंग-वचन संबंधी अनेकरूपता समाप्त होने लगी तथा एक स्थिर रूप निखर कर आया।

कालांतर में छायावाद के चारों कवियों ने हिन्दी के विकास को साहित्यिक ऊंचाईयों तक पहुंचा कर और समृद्ध किया।

4½/10

अंग्रेजी तत्सम [illegible] भाषा-संबंधी एकरूपता की चर्चा करें

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)



(घ) यूनीकोड और हिंदी

यूनीकोड एक कम्प्यूटर कोड है जिसकी सहायता से किसी भी भाषा को कम्प्यूटर के पर्दे पर उतारा जाता है।

यूनीकोड के पहले 'आस्की (ASCII)' नामक पद्धति प्रचलित थी जो 8 bit व्यवस्था पर आधारित थी। आस्की पद्धति में समस्या थी कि हिन्दी के सभी प्रतीक चिह्न समुचित रूप से कम्प्यूटर के पर्दे पर नहीं उतर पाते थे। उनमें विकृतता आदि दोष विद्यमान थे। इस प्रकार यह केवल अंग्रेजी के लिये उपयुक्त थी।

यूनीकोड, आस्की पद्धति का ही संशोधित रूप है जो 16 Bit पर आधारित है। इसमें हिन्दी के साथ-साथ अन्य कई भारतीय व विदेशी भाषाओं को बिना किसी समस्या के पर्दे पर उतारा जा सकता है।

यूनीकोड के आगमन से डिजिटल स्तर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

पर भाषायी लोकतंत्र की स्थापना हुई तथा अंग्रेजी का प्रभुत्व कम हुआ। ~~इसके~~ इसका आना हिन्दी के विशिष्ट प्रारूप का आधार बना तथा देखते ही देखते हिन्दी के विविध प्रयोग में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई।

आज ~~[illegible]~~ 'कार्यालय', 'मधकोश', 'पणकोश', 'अनुश्रुति', 'अभिव्यक्ति' आदि वेबसाइट हिन्दी का निर्बाध रूप से प्रयोग कर रही हैं। ~~है~~ आवश्यकता है हिन्दी को तकनीकी रूप में और समृद्ध बनाने की जिससे इसका व्यापक रूप से प्रयोग हो सके।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ङ) 'हरियाणी' बोली

हरियाणा प्रदेश की बोली को ही हरियाणी बोली कहा जाता है। इसका क्षेत्र उत्तरी राजस्थान, ~~[illegible]~~ हरियाणा, ~~[illegible]~~ पंजाब के कुछ जिलों व दिल्ली तक विस्तृत है। इसके प्रयोक्ता क्षेत्र को "बांगर" बोले जाने के कारण हरियाणी को "बांगरू" नाम से भी जाना जाता है। उपभाषा वर्ग की दृष्टि से यह पश्चिमी हिन्दी में शामिल है।

'हरियाणी' की विशेषताएं निम्नलिखित हैं।

(1) इसमें 'न' को 'ण' के रूप में उच्चरित करने की प्रवृत्ति मिलती है।

उदा. कौन > कुण    जाति-पहचान > जाण-पिछाण

(2) परवर्ती व्यंजनों का द्वित्वीकरण।

उदा. पाल्लया।

(3) अल्पप्राणीकरण तथा व्यंजन संयोग की प्रवृत्ति।

उदा. आधा > आदा , छिप गया > छिग्गा


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(4) बहुवचन बनाने हेतु 'आँ' प्रत्यय व लिंग परिवर्तन हेतु 'न', 'इन' आदि प्रत्ययों का उपयोग होता है।

[उदा.] घोड़ों को > घोड़ाँ कूं

नागिन > नागन

(5) इसके कारकीय परसर्ग निम्न हैं

[उदा.] कर्ता > ने, नैं, नै

कर्म > कूँ, कुं

सम्प्रदान > खातर

(6) आरम्भिक स्वरों का लोप

[उदा.] इकट्ठा > कट्ठा

अपनी क्षेत्रगत निकटता के कारण इसकी ध्वनिगत विशेषताएँ खड़ी बोली से मिलती जुलती है।

वर्तमान में कई फिल्मों में रात सेग की संस्कृति के चित्रण होने से लोगों में हरियाणी के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

5/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation



दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) खड़ी बोली के उदय एवं विकास में कौन-से तत्त्व सक्रिय रहे हैं? विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

3. (क) पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण हेतु उपयुक्त नीतियों का निर्धारण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पारिभाषिक शब्द वे शब्द होते हैं जिनका एक विशेष संदर्भ में उपयोग होता है। तथा एक निश्चित अर्थ प्रदान करते हैं। इनके उपयोग में वस्तुनिष्ठता और औपचारिकता होती है।

उदा. अर्थशास्त्र में 'मांग' और 'आवृत्ति'

पारिभाषिक शब्दावली हेतु मुख्यतः 3 अवधारणाएँ मिलती हैं।

(1) पुनरुत्थानवादी :- डॉ. रघुवीर इसके प्रमुख प्रणेता रहे हैं। इसके अंतर्गत हिन्दी के संस्कृत धातु से निर्मित शब्दों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। यह अरबी-फारसी मूल के शब्दों को उपयोग में लेने का समर्थक नहीं है।

उदा. विधि → विधिक → विधायक → वैध (संस्कृत)



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation





कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(2) एक अन्य अवधारणा में हिन्दुस्तानी के शब्दों को सहज रूप में स्वीकृत किये जाने का आग्रह मिलता है ताकि सामाजिक-भाषिक संरचना बनी रहे। (डॉ. सुंदरलाल)

उदा. तालीम, पत्रकारी।

(3) अंतर्राष्ट्रीय सम्प्रदाय जिसके अंतर्गत डॉ. नीरल शास्त्री व शांतिस्वरूप भटनागर हैं का मानना है कि जो अंतर्राष्ट्रीय शब्द हिन्दी में प्रचलित हो गये हैं उन्हें उसी रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

उदा. इलेक्ट्रान, मशीन आदि।

इनमें से किसी भी एक अवधारणा को प्राथमिकता देना एकआयामी भाषा का

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जनक होगा। अतः उपयुक्त यही है कि इन तीनों ही अवधारणाओं में उपयुक्त समन्वय साधा जाए।

इसी क्रम में भारतीय राजभाषा आयोग ने पारिभाषिक शब्दावली के लिये कुछ सूत्र स्वीकृत किये हैं जो मूलतः इन्हीं अवधारणाओं पर आधारित हैं।

साथ ही साथ हिन्दी में अनुवाद कार्य तथा बनाए ~~जाते~~ गये शब्दों के प्रचलन पर भी जोर देने की आवश्यकता है क्यूंकि (क्योंकि) भाषा का जन्म समाज में होता है वैज्ञानिकों की प्रयोगशाला में नहीं।

Good 11½/20



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation



दृष्टि The Vision

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 31, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) हिंदी की विशेषण-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

किसी वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम पदों की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहा जाता है।

हिन्दी में संभावतः विशेषणों की परम्परा अपभ्रंश तथा सिद्ध-नाथ साहित्य के काल में भी देखी जा सकती है।

उदा. "नौ लख पातरि आगे नाचै पीछै सहज अखाड़ा
ऐसो मन लै जोगी खेलै तब अंतरि बसै भंडारा ॥"
(गोरखनाथ)

हिन्दी के विशेषणों को निम्न भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

(1) गुणवाचक : संज्ञा पदों का गुण विवेचित करने वाले पद।

उदा. राम पीला सूट पहने है।
→ गुणवाचक विशेषण



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

उदा. लम्बी लड़की

(2) परिमाणबोधक : संज्ञा पदों के परिमाण बताने वाले विशेषण।

उदा. राम थोड़ा पानी पीता है।

उदा. हल्का गर्म

(3) सार्वनामिक : सर्वनाम पदों के माध्यम से विशेषता बताने वाले।

उदा. मुझे यही नौकरी चाहिए।

उदा. वही किताब

(4) सम्बन्धबोधक : संज्ञा या सर्वनाम पदों के संबंध के माध्यम से विशेषता बताने वाले।

उदा. जिस किताब में 100 पृष्ठ हैं वही खरीदो।



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिन्दी की व्याकरणीक व्यवस्था मोटे तौर पर संस्कृत पर आधारित है। यह वैज्ञानिक दृष्टि से समृद्ध करती है और भाषा के विकास में योगदान देती है।

G.1 6/7.1



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भोजपुरी' बोली का परिचय दीजिये। 15

भोजपुरी "बिहारी हिन्दी" उपभाषा वर्ग की बोली है जिसका प्रयोग पूर्वी ~~बिहार~~ उत्तर प्रदेश, बिहार तथा पश्चिम बंगाल के कुछ क्षेत्रों में होता है।

इसके प्रयोक्ताओं की संख्या करोड़ों में है तथा साथ ही साथ फिजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद एवं टोबैगो आदि देशों में भी इसको बोलने वाले लोग रहते हैं।

प्रमुख जिलों का नामोल्लेख

**भोजपुरी की भाषिक विशेषताएँ**

(1) 'ण' के स्थान पर 'न' तथा 'ड़' के स्थान पर 'र' का प्रयोग।

उदा. बाण > बान
गाड़ी > गारी

(2) स्त्रीलिंग बनाने हेतु इया, इन, इनी आदि प्रत्ययों का प्रयोग

उदा. सरपंच > सरपंचनी



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(3) उत्तमपुरुष सर्वनाम बहुवचन के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

[उदा] मैं > हम
हम > हम लोग

(4) ~~कारक~~ व्याकरण में क्रिया
वर्तमान > 'त' रूप
भूतकाल > 'ल' रूप
भविष्यकाल > 'ब' रूप

वर्तमान मे मनोरंजन साधनों तथा फिल्मों व गीतों के माध्यम से भोजपुरी भाषा का अप्रतिम संरक्षण व संवर्धन हुआ है।

प्रचुर लोकसाहित्य मिलता है भिखारी ठाकुर जैसे उदीo कलाकार भी हुए हैं।


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation


कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिंदी की वर्तमान स्थिति पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रयोजनमूलक भाषा से आशय हिन्दी के उस रूप से है जिसका उपयोग आधुनिक-वैज्ञानिक संदर्भों में किया जा सके। उदाहरण स्वरूप विज्ञान, वाणिज्य, प्रशासन, तकनीक, मनोरंजन आदि के लिये प्रयुक्त होने वाली हिन्दी प्रयोजनमूलक हिन्दी है।

वर्तमान स्थिति को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है।

**विज्ञान व तकनीक** :- पिछले 50 वर्षों में अनुवाद कार्यों में प्रगति के बावजूद विज्ञान व तकनीकी के क्षेत्रों में हिन्दी की स्थिति कमजोर है। इसका कारण है अनुवादित शब्दों का अप्रचलित होना तथा वैज्ञानिकों का इस सम्बन्ध में रुझान न होना।


Copyright – Drishti The Vision Foundation


कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

**वाणिज्य** :- भूमण्डलीकरण की अवधारणा मुख्यतः आर्थिक-वाणिज्यिक संदर्भों से जुड़ी है। चूँकि हिन्दी का प्रयोक्ता वर्ग लगभग 70% है, इस संदर्भ में हिन्दी की स्थिति मजबूत है, यही कारण है विभिन्न कम्पनियाँ अपने उत्पाद [केमकुर्के, ब्रिटा] हिन्दी में भी उपलब्ध कराती हैं।

**प्रशासन** :- प्रशासनिक स्तरों पर कार्यालयों में हिन्दी और अंग्रेजी को लेकर एक खींचतान सी रहती है। संवैधानिक तौर पर [अनु. 351] हिन्दी का प्रचार-प्रसार संघ का दायित्व है किन्तु राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी तथा हिन्दी के विरोध के चलते अधिकांश केन्द्रीय कार्यालयों में हिन्दी के बजाय अंग्रेजी में काम होता है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि
The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मनोरंजन :- चूँकि राष्ट्र की अपनी भाषा [70%] हिन्दी है अतः मनोरंजन के क्षेत्र में हिन्दी की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर है।

हिन्दी संगीत व फिल्मों के दक्षिण व उत्तर-पूर्व भारत में बढ़ते प्रचलन इसका प्रमाण है।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि कुछ क्षेत्रों को छोड़कर स्थिति उत्साहजनक नहीं है। आवश्यकता है राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 तथा त्रिभाषा सूत्र को अपनाने की जिससे भाषिक अवरोध समाप्त हों।

~~इस व्यवस्था के~~

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

11½/20


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation



दृष्टि
The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिंदी की वाक्य-संरचना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

वाक्य पदों के उस समूह को कहते हैं जिससे एक अर्थ का बोध होता है।

उदा. भारत एक स्वतंत्र देश है।

मानक हिन्दी की वाक्य-संरचना को उसके उपवाक्यों के आधार पर निम्न तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है।

① सरल वाक्य :- जिस वाक्य में एक विधेय व एक उद्देश्य होता है, सरल वाक्य कहलाता है।

उदा. राधा घर जाती है।

② संयुक्त वाक्य :- जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य तथा एक आश्रित उपवाक्य हो, संयुक्त वाक्य कहलाता है।

उदा. राधा ने आम खाया और फिर घर चली गयी।



दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

③ मिश्र वाक्य :- जिस वाक्य में एक या एक से अधिक उपवाक्य हों तथा किसी योजक चिन्ह के माध्यम से जुड़े हों।

उदा. राधा आम खा रही थी तभी बरसात आ गयी न तो वह आम खा पायी और न ही घर जा पायी।

इसके अतिरिक्त वाक्यों को उनकी प्रकृति के आधार पर भी बाँटा जाता है।

उदा. निषेधात्मक ⇒ यहाँ आम खाना मना है।

~~आज्ञार्थ~~

आदेशात्मक ⇒ मैंने कहा आम खाओ।

इत्यादि।

हिन्दी की वाक्य रचना अंग्रेजी के कर्ता - क्रिया - कर्म (S-V-O) पर आधारित न

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

होकर संस्कृत की भाँति कर्ता - कर्म - क्रिया के क्रम पर आधारित है।

Good 9/15



दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निर्माण और स्रोत की दृष्टि से हिंदी शब्द के प्रकारों पर प्रकाश डालिये। 15

**स्रोत की दृष्टि से हिन्दी शब्द के प्रकार**

① तत्सम → जो शब्द संस्कृत शब्दावली से सीधे आयें हैं। उदा. सूर्य, नासिका

② तद्भव → जो शब्द तत्सम से तद्भवीकरण की प्रक्रिया में बनें हैं।
उदा. सूर्य → सूरज
नासिका → नाक

③ देशज → जो शब्द अपनी ध्वनिगत अर्थ व्यंजक गुणों के कारण सुविधापूर्वक बना लिये गयें हैं। उदा. खटखटाना
चरमराना

④ विदेशज → जो शब्द बाहरी भाषाओं जैसे अंग्रेजी, फारसी से आये हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उदा. मशीन, गाड़ी आदि।

**स्रोत की दृष्टि से हिन्दी शब्द**

① रूढ़ → जिनका उद्गम ज्ञात न हो या जिन्हें और विभाजित न किया जा सके।

उदा. विद्या

② यौगिक → रूढ़ शब्दों के साथ अन्य शब्द, उपसर्ग या प्रत्यय लगाकर बनाये गये शब्द

उदा. विद्यालय

③ योगरूढ़ → संरचना में यौगिक के समान किन्तु अपना अलग अर्थ देते हो

उदा. कमलापति → विष्णु

इस प्रकार हिन्दी शब्दावली विविधताओं से भरी हुई है तथा प्रकृति में सामाजिक है



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

## खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लाला लाजपतराय का योगदान

राष्ट्रभाषा हिन्दी को (19-20वीं सदी) लाला लाजपत राय, राजर्षि टंडन, सेठ गोविंद दास, काका कालेलकर, मदन मोहन मालवीय सरीखे स्वतंत्रता सेनानियों का समर्थन प्राप्त हुआ। इससे हिन्दी की जनसामान्य में स्वीकृति तो मिली ही एक राष्ट्रीय एकता को आधार प्रदान करने वाला तत्त्व भी मिला।

**राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में लाला लाजपत राय का योगदान**

① इन्होंने पंजाब क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दिया तथा जनसामान्य की रुचि हिन्दी पढ़ने में जगाई।

② इन्होंने "पंजाब शिक्षा संघ" की स्थापना में आधारभूत योगदान दिया। इस संस्था के माध्यम से ज्ञान-विज्ञान की सामग्री हिन्दी में भी उपलब्ध हुई।

③ इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय में 'मुद्रा' तथा 'रत्नाकर' नामक दो कार्यक्रमों की शुरुआत की जिससे हिन्दी अनुवाद व पठन-पाठन को बल मिला।

④ आर्य भाषा हिन्दी के मूल प्रयोक्ता क्षेत्र से अलग होने के बावजूद इन्होंने पंजाब क्षेत्र में भाषिक अंतर्विरोधों को झेला तथा राष्ट्रभाषा व राष्ट्रीय एकता संबंध में लोगों को जागरूक किया।

आज जबकि राजनीतिक कारणों से भारत के कुछ क्षेत्रों में हिन्दी का विरोध किया जाता है, लाला लाजपत राय का व्यक्तित्व व कृतित्व एक प्रेरणा स्रोत के रूप में हमें प्रेरणा देता है।

G.A. 6/10


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'बुंदेली' बोली

शौरसेनी अपभ्रंश से उत्पन्न

'बुंदेली', बुंदेलखण्ड की बोली है जिसके अंतर्गत मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश तथा महाराष्ट्र के कुछ क्षेत्र शामिल हैं। इनमें जबलपुर, झाँसी, ~~महोबा~~ ललितपुर, नागपुर आदि शहर शामिल हैं।

उपभाषा वर्ग की दृष्टि से 'बुंदेली' पश्चिमी हिन्दी के अंतर्गत आती है। इसकी ध्वनिगत तथा व्याकरणिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

(1) 'व को ब' तथा 'ड़ को र' के रूप में उच्चरित करने की प्रवृत्ति।

उदा. बबूल > बबूरा   झगड़ा > झगरो

(2) ऐ तथा औ का उच्चारण संध्यक्षरों (अवधी की भाँति) तथा मूल स्वर (ब्रज की भाँति) में किया जाता है।

(3) व्यंजनों के बीच में आने वाले 'ह' को उ के रूप में उच्चरित करना इसकी अपनी विशेषता है।


Copyright - Drishti The Vision Foundation


उदा. चाहत > चाउत

(4) इसका प्रयोक्ता क्षेत्र विस्तृत होने के कारण इसकी शब्दावली उड़िया, मराठी, दक्खिनी आदि से प्रभावित है।

(5) कारकीय परसर्गों में 'सम्प्रदान' हेतु 'कः' का उपयोग बुंदेली की अपनी विशेषता है।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान सुभद्रा कुमारी चौहान ने बुंदेलखण्ड की वीरांगना तथा उनकी गाथा को खड़ी बोली में बखूबी पिरोया है।

"बुंदेले हरबोलो के मुँह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी"

Good 6/10


Copyright - Drishti The Vision Foundation

(ग) भाषा और बोली में अंतर

जब कोई बोली विभिन्न सामाजिक, राजनैतिक संयोगों के कारण मानकीकृत व परिष्कृत होकर एक निश्चित लिपि व स्वरूप प्राप्त कर लेती है तो भाषा कहलाती है। उदा. मानक अथवा परिनिष्ठित हिंदी एक भाषा है जबकि अवधी एक बोली।

इनके अंतरों को निम्न तालिका के माध्यम से समझा जा सकता है

| अंतर | बोली | भाषा |
|---|---|---|
| ⊙ व्याकरण | ⊙ कोई निश्चित व्याकरण नहीं | ⊙ व्याकरण के नियम निश्चित हैं। |
| ⊙ प्रयोक्ता क्षेत्र व समुदाय | ⊙ सीमित | ⊙ विस्तृत |
| ⊙ आधुनिक प्रयोजन | ⊙ अनुकूल नहीं है। | ⊙ आधुनिक प्रयोजन यथा विज्ञान, वाणिज्य के अनुकूल |
| ⊙ लिपि | ⊙ सुव्यवस्थित लिपि का प्रायः अभाव। | ⊙ सुव्यवस्थित लिपि |
| ⊙ प्रशासनिक स्वीकृति | ⊙ प्रशासन में प्रयोग नहीं | ⊙ प्रशासन आदि कार्यों में प्रयोग हो सकती है। |





वस्तुतः भाषा और बोली में अंतर से अधिक समानताएँ मिलती हैं। इनमें अंतरों का मूल आधार प्रशासनिक स्वीकृति का है अन्यथा सामाजिक स्तर पर एक ही भाषा की अनेक बोलियाँ समानान्तर रूप से बोली जाती हैं।

आज वैश्वीकरण के कारण हिन्दी की कई बोलियाँ जैसे अवधी अपने अस्तित्व के संकट से जूझ रही हैं। आवश्यकता है इन बोलियों के संरक्षण की जिससे हमारी नई पीढ़ी भी इनके समृद्ध साहित्य से रूबरू हो सके।




दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइंस, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(घ) राष्ट्रभाषा और राजभाषा का अंतर

प्रशासनिक व विधि संबंधित कार्यों के लिये संविधान द्वारा स्वीकृत भाषा को राजभाषा कहा जाता है। उदा. हेतु हिंदी व अंग्रेजी (अस्थायी रूप से) को भारत में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। इस हेतु संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक विविध प्रावधान हैं।

वहीं सरल शब्दों में राष्ट्र की भाषा ही राष्ट्रभाषा है। यह रोने, हँसने और अधिकार माँगने की भाषा है जो जनसामान्य में प्रचलित है।

राष्ट्रभाषा और राजभाषा के अंतरों को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है

① राष्ट्रभाषा का शब्दकोष अनौपचारिक व आत्मनिष्ठ होता है। वहीं राजभाषा औपचारिक व वस्तुनिष्ठता के आयाम लिये होती है।

② राष्ट्रभाषा का निर्माण सदियों तक चलते रहने वाली अनवरत प्रक्रिया है। इसमें यदा-कदा ही परिवर्तन होते हैं। वहीं राजभाषा केवल शासन



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation



द्वारा स्वीकृत भाषा है। अगर प्रशासन चाहे तो एक झटके में भी राजभाषा परिवर्तित हो सकती है। उदा. जर्मनी में जर्मन को 1871 में 1 वर्ष के भीतर लागू करवा दिया गया।

③ राष्ट्रभाषा सहज रूप से काव्यभाषा हो सकती है क्योंकि इसमें आत्मनिष्ठता व संप्रेषण की अपार संभावनाएं हैं वहीं राजभाषा का काव्य भाषा के रूप में उपयोग मुश्किल है।

④ राष्ट्रभाषा एक सामाजिक-सांस्कृतिक-ऐतिहासिक उत्पाद है वहीं राजभाषा मूलतः राजनैतिक उत्पाद है।

आजादी के 75 सालों के बाद भी हमारा देश औपचारिक तौर पर राष्ट्रभाषा की अनुपस्थिति से जूझ रहा है। आवश्यकता है विभिन्न भाषिक गतिरोधों का लोकतांत्रिक तरीकों से निपटान हो तथा हिंदी को सांकेतिक तौर पर ही सही पर राष्ट्रभाषा का दर्जा मिले।



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 19वीं शताब्दी में 'खड़ी बोली' के विकास में प्रेस की भूमिका

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

16 वीं शताब्दी में पुर्तगालियों द्वारा भारत में प्रेस की स्थापना करना एक महत्वपूर्ण घटना थी जिसने विभिन्न भाषाओं के विकास में योगदान दिया।

19 वीं शताब्दी में खड़ी बोली के विकास में प्रेस का योगदान निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है

① 1826 ई. में हिन्दी की प्रथम पत्रिका उदन्त मार्तण्ड का प्रकाशन हुआ जिसने अन्य प्रकाशकों का इस दिशा में मार्ग प्रशस्त किया।

② राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द ने 1845 में 'बनारस' अखबार निकाला तथा लेखों में खड़ी बोली का उपयोग किया।

③ कालान्तर में 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारतेन्दु के आगमन के पश्चात पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन में तेजी आयी। भारतेन्दु ने



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation



दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कविवचन सुधा, बाल बोधिनी पत्रिका, हरिश्चंद्र मैगजीन आदि का प्रकाशन किया।

④ ईसाई मिशनरियों द्वारा अपने धर्म के प्रचार प्रसार हेतु बाइबिल के संक्षिप्त अनुवाद प्रकाशित करवाये गये।

⑤ विभिन्न सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों यथा आर्य समाज, ब्रह्म समाज द्वारा अपने साहित्य का प्रकाशन किया गया।

इस प्रकार प्रेस ने 19वीं शताब्दी में हिन्दी के प्रयोक्ता वर्ग तथा जनसामान्य तक पहुंच में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'ब्रज' और 'अवधी' बोलियों के पारस्परिक संबंध पर नातिदीर्घ निबंध लिखिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'ब्रज' और 'अवधी' हिन्दी क्षेत्र की प्रमुख बोलियाँ हैं तथा मध्यकाल से ही एक सम्पन्न साहित्यिक परम्परा को धारण करती हैं।

इन बोलियों के पारस्परिक संबंधों को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है।

(1) 'ब्रज' और 'अवधी' में समानता के तत्त्व

① दोनों ही बोलियों ने खड़ी बोली के साथ मिलकर मानक हिन्दी की आधारभूत संरचना में योगदान दिया है।

(अ) मानक हिन्दी में ण के स्थान पर 'न' का प्रयोग (अवधी)

(ब) मानक हिन्दी में 'ऐ' और 'औ' का सही रूप में प्रयोग (ब्रज)

(स) स्त्रीलिंग में 'नी', 'इन', 'ईनी' आदि प्रत्ययों का प्रयोग (ब्रज व अवधी)

(द) मानक हिन्दी की कारक व्यवस्था तथा



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation





कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सर्वनाम व्यवस्था में भी ब्रज और अवधी का प्रभाव सलक्षित है।

(इ.) शब्दावली के स्तर पर सांस्कारत: ब्रज और अवधी के कई शब्द सहज रूप में मानक हिन्दी में शामिल हैं।

② समान क्षेत्र में प्रचलन :- ब्रज प्रदेश और अवध प्रदेश की भौगोलिक सीमाएँ अभ्यन्तरित भी हैं। इसी कारण तुलसी की रामचरितमानस में अवधी है तो कवितावली में ब्रज का।

'ब्रज' और 'अवधी' में विभिन्नता के तत्त्व

① व्याकरणिक स्तर पर

(अ) ब्रज एक ओकारांत बोली है जबकि अवधी उकारांत।

उदा. कालो, सोनो (ब्रज) व नेरू, जोरू (अवधी)



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ब) अवधी में संज्ञा के 3 तीन रूप प्रचलित हैं जबकि ब्रज में केवल 1।

(उदा) लड़का > लरका लरिका लरिकउना

(स) इनमें स्त्रीलिंग तथा बहुवचन बनाने के नियमों में भी अंतर पाया जाता है।

② साहित्यिक स्तर पर

(अ) ब्रज में कृष्ण भक्ति काव्य धारा का विकास होता है वहीं अवधी में रामकाव्य धारा का।

(ब) ब्रज का भौगोलिक क्षेत्र विस्तृत है (पंजाब, महाराष्ट्र तक) जबकि अवधी, अवध प्रदेश तक सीमित है

(स) रीतिकाल तक आते-आते अवध का प्रयोग सीमित हो जाता है वहीं ब्रज अभूतपूर्व तरीके से कलात्मक ऊंचाईयों को छूती है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation



वर्तमान में, विशेषतः 19 वीं सदी से दोनों ही बोलियाँ अपना दायित्व खड़ी बोली हिन्दी को सौंप चुकी हैं। कुछ चुनिंदा साहित्यकार ही रमाशंकर रसाल, वियोगी हरि (ब्रज) तथा चंद्रभूषण द्विवेदी (अवधी) अभी इन बोलियों में सक्रिय हैं।

आवश्यकता है इन बोलियों के संरक्षण की जिससे हमारी सांस्कृतिक विरासत संरक्षित हो सके।

12/20


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

(ख) हिंदी में अनूदित लेखन पर प्रकाश डालिये। 15

हिन्दी में अनूदित लेखन की परम्परा प्राचीन काल से ही रही है। मध्यकाल में मुगलों द्वारा यहाँ के संस्कृत साहित्य का क्षेत्रीय बोलियों में अनुवाद करवाया। साथ ही साथ अरबी, तुर्की, साहित्य का भी अनुवाद हुआ।

आधुनिक काल में अनुवाद कार्य का क्षेत्र विस्तृत होता है तथा अन्य कई विदेशी भाषाओं की कृतियों का अनुवाद किया गया।

(1) भारतेन्दु द्वारा संस्कृत के नाटकों का अनुवाद (नीलदेवी) तथा इंग्लिश नाटकों का हिन्दी रूप में लेखन (द मर्चेंट ऑफ वेनिस)

(2) सामाजिक - धार्मिक संस्थाओं द्वारा संस्कृत में उपलब्ध वेदांत, उपनिषद व पुराणों का हिंदी में अनुवाद। [उदा] आर्य समाज


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation


दृष्टि The Vision

(3) ईसाई मिशनरियों द्वारा बाइबिल का हिन्दी में अनुवाद।

(4) स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार की समाजवादी नीतियों तथा वाहरी दबावों के कारण रूसी साहित्य का बड़ी संख्या में हिन्दी में अनुवाद किया गया।

(5) वर्तमान समय में कई लेखक प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय कृतियों का हिन्दी में अनुवाद कार्य कर रहे हैं। [उदा] अनंत अम्बर, सुशोभित सक्तावत आदि।

हाल ही में हिन्दी उपन्यास 'रेत समाधि' के अंग्रेजी अनुवाद "द टूम्ब ऑफ सैन्ड" को बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया जो कि हिन्दी साहित्यिक जगत के लिये गौरव का विषय है।

7½/15

कुछ अन्य अनूदित कृतियों का भी उल्लेख करें।


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'दक्खिनी हिंदी' के प्रयोग-क्षेत्र बतलाते हुए 'दक्खिनी हिंदी' की भाषागत विशेषताओं का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दक्खिनी हिंदी, खड़ी बोली का ही रूप है जो कि कुछ राजनैतिक, सामाजिक कारणों से दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों में प्रचलित हुआ।

दक्खिनी हिन्दी का प्रयोग क्षेत्र

इसमें आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र के साथ साथ समीपवर्ती कर्नाटक के क्षेत्र भी शामिल हैं।

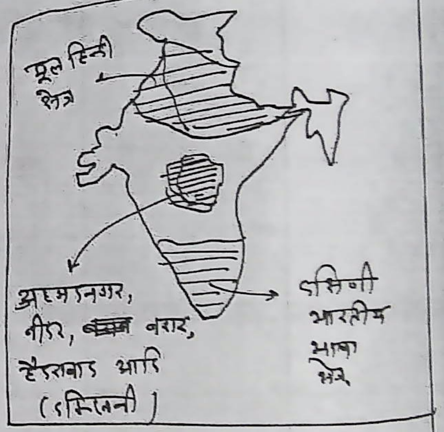


दक्खिनी हिन्दी की भाषागत विशेषताएँ


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति।
   भाषा > भासा     झूठ > झूट
2. आरम्भिक स्वर के लोप की प्रवृत्ति।
   एकट्ठा > कट्ठा
3. 'म्ब' के स्थान पर 'म्म' व 'न्द' के स्थान पर 'न्न'
   गुम्बज > गुम्मज     चान्दनी > चाननी
4. वर्ण विपर्यय की प्रवृत्ति।
   लखनऊ > नखलऊ
5. कालांतर के क्रम पर मराठी, कन्नड़, तेलुगु भाषाओं का भी प्रभाव पड़ता गया।
6. व्याकरणिक विशेषताओं में → स्त्रीलिंग विशेषणों का विशेष्य के साथ परिवर्तित हो जाना।
   जम्हाई लेती लड़की > जम्हाईयाँ लेतियाँ लड़कियाँ



आवश्यकता है दक्खिनी व खड़ी बोली के समानता के तत्वों पर शोध करने की जिससे हिन्दी का दक्षिण क्षेत्रों के विरोध कम हो जाए।